पाठ 19

हाय मेरी चारपाई

होली का त्योहार बुराई पर अच्छाई की विजय का त्योहार है। लेकिन इसमें बहुत–सी बुराइयाँ आ गई हैं। हँसी–खुशी के वातावरण में त्योहार मनाने की जगह इस त्योहार पर लोगों का परस्पर एक दूसरे पर कीचड़ डालना, गालियाँ देना, चोरी के सामान से होली का झाड़ भरना आदि कार्यों से इस त्योहार का महत्व कम होता जा रहा है। इसी तरह की एक घटना इस कहानी में पढ़िए।

बात उन दिनों की है, जिन दिनों मैं निकर पहनता था; यानी छोटा भी था और शरारती भी। मौज–मस्ती के दिन थे; चिंता–फिक्र कोई थी नहीं।

इस वर्ष की तरह उस वर्ष भी होली आई थी। मुहल्ले में होली जलाने के लिए लकड़ी जमा करने की समस्या थी सो आसपास से जितने लकड़ी–फट्ठे इकट्ठे किए जा सकते थे, वे पर्याप्त नहीं थे। इसलिए तय हुआ कि मुहल्ले के पीछे की पहाड़ी से कुछ सूखी झाड़ियाँ काट लाई जाएँ।

आखिर होली का दिन आ गया, लेकिन होली का झाड़ अभी पहाड़ नहीं हो पाया था। दोस्तों की चिंता को देखते हुए मैंने मंडली को सुझाव दिया, ''क्यों न कुछ लोगों के यहाँ से चारपाई, लकड़ी के फाटक, कुर्सी–मेज और ऐसा कोई भी सामान, जो बाहर रखा हो, उठा लिया जाए। इस काम में मुहल्ले के खूसट और गुस्सैल लोगों का विशेष ध्यान रखा जाए, जिन्होंने हमें वर्ष भर सताया है।'' सुझाव मान लिया गया।

अब क्या था ? सारी मंडली चार–पाँच टुकड़ों में बँट गई। हर टुकड़े में तीन–चार लड़के थे। सबने अपने–अपने घरों से दूर के इलाके चुने और हमारा अभियान शुरू हो गया। फिर तो तरह–तरह का लकड़ी का सामान आता रहा और टूट–टाटकर होली के झाड़ में पड़ता रहा। कुछ ही घंटों में झाड़ का पहाड़ बन गया।

मैं अपनी टुकड़ी का नेतृत्व कर रहा था; मेरे साथ तीन लड़के और थे। हम लोगों ने मास्टर रतिलाल और पंडित गंगाप्रसाद की चारपाई, मन्ने साव का फाटक, हरीचंद चूनेवाले की सीढ़ी और न जाने क्या–क्या होली की भेंट चढ़ा दिया।

शिक्षण–संकेत : कक्षा में होली के हुड़दंग पर चर्चा करें। बच्चों से पूछें कि वे उस दिन क्या–क्या करतब करते हैं। इनसे कुछ लोगों को प्रसन्नता होती होगी तो कुछ दुखी भी होते होंगे। उनसे पूछिए कि लोगों को दुख पहुँचाकर खुश होना अच्छी बात है क्या ? हम किसी की वस्तु को लाकर होली में जला देते हैं और खुश होते हैं लेकिन जब अपनी वस्तु इस तरह चोरी की जाने के बाद राख हो जाती है तो हमें दुख होता है। ऐसे कामों का परिणाम सोचकर ही काम किए जाएँ।

आखिर होली जलने का समय भी आ गया। होली–दहन आरंभ हुआ और देखते–ही–देखते झाड़ का पहाड़ धू–धूकर जलने लगा। टूटे टीन के कनस्तर का ढोल बजा, मंडली के बदन में थिरकन हुई और फिर जो हुड़दंग शुरू हुआ, तो रात के बारह बजे जाकर रुका।

घर पहुँचकर मैंने देखा कि सब लोग परेशान बैठे हैं। माँ और पिता जी के चेहरों पर गुस्से और परेशानी के भाव हैं। मैंने सोचा, आज तो मेरी खैर नहीं। डरते–डरते जैसे ही घर में कदम रखा कि पिता जी की सख्त आवाज सुनाई दी,"क्यों रे! तेरी चारपाई कहाँ है ?"

"मेरी चारपाई ?" मैंने चौंककर कहा। "हाँ, हमने सारा घर देख लिया। कहीं नहीं मिली। कहाँ रखी थी निकालकर ?" माँ ने पूछा।

मुझे काटो तो खून नहीं। अब से कुछ देर पहले की सारी मस्ती उतर गई। हुड़दंग का रंग फीका पड़ गया। टूटे हुए कनस्तर की ठक्–ठक् कानों में गूँजने लगी।

मैंने कोई जवाब नहीं दिया, मगर तभी मुझे ध्यान आया कि हमारी मंडली के जो छोकरे इस तरफ आए थे, उनमें बिल्लू भी था और उन दिनों मेरी बिल्लू से कुछ खटक भी रही थी। बात साफ हो चुकी थी कि हो–न–हो यह जरूर बिल्लू का ही काम है।

खैर, जैसे–तैसे मन को समझाया कि अब जो होना था, सो हो गया। मगर उस रात तो मुझे फर्श पर दरी बिछाकर ही सोना पड़ा। अब भी जब–जब होली आती है, मैं अपनी चारपाई को जरूर याद कर लेता हूँ।

शब्दार्थ

शरारती	–	शरारत करनेवाला
हुड़दंग	–	उपद्रव
अभियान	–	किसी विशेष कार्य के लिए योजना बनाकर उस पर कार्य करना।
कनस्तर	–	खाली पीपा
होली दहन	–	होली जलना/होली जलाना
खटकना	–	बुरा लगना, अनबन होना
थिरकन	–	ठुमक–ठुमककर चलना, नाचते हुए चलना।

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1 होली के झाड़ को पहाड़ जैसा ऊँचा बनाने के लिए बच्चों को क्या करना पडा ?

प्रश्न 2 होली के लिए कहाँ–कहाँ से सामान लाया गया ?

प्रश्न 3 होली के लिए सामान उठाने में किन लोगों का विशेष ध्यान रखा गया ?

प्रश्न 4 कहानी के नायक को होली–दहन की रात फर्श पर ही दरी बिछाकर क्यों सोना पड़ा?

प्रश्न 5 माँ और पिता जी के चेहरे पर गुस्से और परेशानी के भाव क्यों थे ?

प्रश्न 6 बच्चों की टोली ने लोगों के घरों से होली जलाने के लिए जो सामान उठाया, क्या तुम्हारी दृष्टि में यह काम उचित था ? क्यों?

प्रश्न 7 होली पर लोग हुड़दंग मचाते हैं, दूसरों को परेशान भी करते हैं। तुमने किस तरह से होली मनाई ? क्या तुम हुड़दंग मचाना उचित समझते हो ?

भाषातत्व और व्याकरण

- शिक्षक पाठ में से किसी एक अनुच्छेद का श्रुतिलेख बच्चों को लिखाएँ। पुस्तक में से शब्द देखकर तथा अनुच्छेद देखकर बच्चों को इसकी जाँच करने को कहें।

प्रश्न 1 दुःख और शोक की अवस्था में लोगों के मुँह से 'हाय' शब्द निकलता है। इसी प्रकार निम्नलिखित अवसरों पर हमारे मुँह से कौन से शब्द निकलते हैं –

प्रसन्नता में / आश्चर्य में /उत्साह में /चिन्ता में ।

प्रश्न 2 नीचे दिए गए मुहावरों के अर्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो।

क. काटो तो खून नहीं — ख. रंग फीका पड़ जाना

ग. झाड़ का पहाड़ बन जाना — घ. भेंट चढ़ा देना।

प्रश्न 3 नीचे दिए गए शब्दों/शब्द–समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो।

मौज–मस्ती, आसपास, डरते–डरते, देखते–ही–देखते, मंडली, परेशान, शरारत, चौंककर, नेतृत्व।

प्रश्न 4 नीचे लिखे वाक्यों को सही करके पुनः लिखो।

क. रिमझिम–रिमझिम पानी की बूंद बरस रहा है।

ख. हर टुकड़ा में तीन–चार लड़के था।

ग. हर वर्ष का तरह होली आया।

घ़ उन दिनों मेरा बिल्लू से खटक रहा था।

ङ. लड़कियाँ हंस रहे हैं।

- नीचे लिखे वाक्य को पढ़ो।

  ‘‘राम ने रावण को मारा’’।

  इस वाक्य में ‘ने’ शब्द राम व रावण को जोड़ने का काम कर रहा है। ‘को’ शब्द रावण व मारा को जोड़ने का काम कर रहा है।

प्रश्न 5 ‘ने’ और ‘को’ का प्रयोग करते हुए दो वाक्य बनाकर लिखो।

- शब्दों का वाक्य में प्रयोग करके शब्दों के लिंग के बारे में पता किया जा सकता है, जैसे भैंस काली होती है। कौआ काला होता है। काला, काली; होता है, होती है शब्दों से पुल्लिंग और स्त्रीलिंग की जानकारी हो सकती है।

प्रश्न 6 निम्नलिखित शब्दों में जो स्त्रीलिंग हैं उन्हें स्त्रीलिंग के वर्ग में और जो पुल्लिंग हैं उन्हें पुल्लिंग वर्ग में लिखो :

घुँघरू, भैंस, बोतल, पोशाक, हिरन, वेदना, घटना, पीपल, घी, सुपारी, चपाती, दाँत, अरहर, चारपाई, होली, रंग, कनस्तर, पहाड़, झाड़, मंडली, पहाड़ी।

रचना

- होली शांति और सद्‌भावना के साथ मनाया जानेवाला एक पवित्र त्योहार है। इस दिन लोगों को कीचड़ लगाना, गाली–गलौज करना, देर रात तक नगाड़े बजाकर बुजुर्गों और बच्चों को परेशान करना क्या ठीक है ? अब की बार तुम अपने मुहल्ले में होली का त्यौहार किस तरह शालीनता से मनाओगे, आठ वाक्यों में लिखो।

गतिविधि

- गत्ते/कागज से होली में पहननेवाली झालरदार टोपी और मुखैटा बनाओ।

योग्यता–विस्तार

- पता करो हम होली का त्यौहार क्यों मनाते हैं?
- निम्न बिन्दुओं के आधार पर होली त्यौहार का वर्णन करो–

4WPS76

1. कब मनाया जाता है।
2. क्यों मनाया जाता है।
3. कैसे मनाया जाता है।
4. होली त्यौहार का क्या महत्व है।
5. होली त्यौहार मनाते समय क्या–क्या सावधानियाँ बरतनी चाहिए।